बुंदेलखण्ड

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

Scanned with OKEN Scanner

मध्यप्रदेश गान

सुख का दाता सबका साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।

विंध्याचल सा भाल नर्मदा का जल जिसके पास है,
यहाँ ज्ञान विज्ञान कला का लिखा गया इतिहास है।
उर्वर भूमि, सघन वन, रत्न, सम्पदा जहाँ अशेष हैं,
स्वर-सौरभ-सुषमा से मंडित मेरा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता सबका साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।

चंबल की कल-कल से गुंजित कथा तान, बलिदान की,
खजुराहो में कथा कला की, चित्रकूट में राम की।
भीमबैठका आदिकला का पत्थर पर अभिषेक है,
अमृत कुंड अमरकंटक में, ऐसा मध्यप्रदेश है।

क्षिप्रा में अमृत घट छलका मिला कृष्ण को ज्ञान यहाँ,
महाकाल को तिलक लगाने मिला हमें वरदान यहाँ,
कविता, न्याय, वीरता, गायन, सब कुछ यहाँ विशेष है,
हृदय देश का है यह, मैं इसका, मेरा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता सबका साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।

- श्री महेश श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

बुंदेलखण्ड : शिव अनुराग पटैरया

Bundelkhand : Shiv Anurag Patairya

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

● प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों के निर्माण की, भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्त मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा,
भोपाल (म.प्र.) 462 003
दूरभाष : (0755) 2553084, 2762123

संस्करण: द्वितीय (संशोधित परिवर्द्धित) 2017

मूल्य :रूपये. 120.00 (एक सौ बीस) मात्र

कम्पोजिंग एवं आवरण : मीडिया ग्राफिक्स एण्ड कम्प्यूटर्स, भोपाल

मुद्रक : श्रेया ऑफसेट,जोन-1,एम.पी.नगर,भोपाल,फोन : (0755) 25

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

अध्याय-1	अतीत और आज	1
अध्याय-2	गौरवशाली इतिहास	11
अध्याय-3	राज्य और रियासतें	25
अध्याय-4	जल संपदा	79
अध्याय-5	लोक जीवन	124
अध्याय-6	बुंदेलखण्ड के मेले	136
अध्याय-7	बुंदेलखण्ड की सामाजिक व्यवस्था	147
अध्याय-8	बुंदलेखण्ड में साहित्य	154
अध्याय-9	आभूषण	164
अध्याय-10	बुंदेलखण्ड का पुरातत्व	167
अध्याय-11	मुद्रा एवं सिक्के	204
अध्याय-12	शैलचित्र	207
अध्याय-13	पत्रकारिता के जुझारू तेवर	210
अध्याय-14	बुंदेली व्यक्तित्व	219

Scanned with OKEN Scanner

महेन्द्र सागर तालाब : महेन्द्र सागर तालाब टीकमगढ़ शहर ही नहीं प्रदेश का एक प्रमुख तालाब है। इस तालाब को उसके निर्माता महाराजा प्रताप सिंह की स्मृति में प्रताप सागर के तौर पर भी पहचाना जाता है। टीकमगढ़ में महल से लगे

इस तालाब का क्षेत्रफल 150 से 200 हेक्टेयर है। 12 मीटर गहरे महेन्द्र सागर तालाब का उपयोग सिंचाई, पेयजल और पर्यटन के लिये होता है। इस तालाब के निर्माण की कथा अतीत की कई घटनाओं से जुड़ती है। इस तालाब का निर्माण तत्कालीन शासक प्रताप सिंह ने तब किया जब उन्होंने मराठों के हमलों से बचने के लिये राज्य की राजधानी ओरछा के स्थान पर वर्तमान टीकमगढ़ ले जाने का फैसला लिया था। ओरछा के तत्कालीन शासक विक्रमादित्य सिंह भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। भगवान श्रीकृष्ण के एक और नाम टीकमजी के नाम पर विक्रमादित्य सिंह ने नई राजधानी का नाम टीकमगढ़ रखा। जब बस्ती बस गयी तब यह सवाल पैदा हुआ कि रहवासियों और यहां आने वाले लोगों की आवश्यकताओं के लिये पानी की व्यवस्था कैसे की जाए। विक्रमादित्य सिंह और उनके बाद के शासकों ने स्थानीय रहवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नगर के चारों तरफ कुएं खुदवा दिए, लेकिन बाहर से आने वाले लोगों के सामने जल की समस्या बरकरार रही। विक्रमादित्य के वंशज महाराजा प्रताप सिंह ने इस समस्या का हल करने के लिये सन् 1887 में नगर के एक ओर